लोंजाइनस का उदात्त तत्व

प्रस्तुति
डॉ0 रमेश प्रताप सिंह
असि0 प्रो0 हिन्दी विभाग
श्री जे0 एन0 एम0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ

एम0 ए0 द्वितीय सेमेस्टर के छात्रों हेतु

- नाम-लोंगिनुस/लोंजाइनस
- समय- ईसा की पहली शती ,कुछ विद्वानों ने तीसरी शती भी माना है ।
- महत्वपूर्ण कृति-पेरिइप्सुस
- अनुवाद- लोंगिनुस आन द सब्लाइम
- (अनुवादक-रीज रॉबर्ट्स,1899
- हिंदी में अनुवाद-काव्य में उदात्त तत्त्व, डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0नेमिचन्द्र जैन)

- लोंगिनुस पाश्चत्य काव्य शास्त्र के महत्वपूर्ण आलोचक थे जिन्होंने पूर्ववर्ती परम्पराओं को आत्मसात करते हुए भावी विकास का द्वार खोला ।
- प्लेटो के लिये साहित्य जहाँ "उत्तेजक" अरस्तू के लिये "विरेचक" था वहीं लोंगिनुस के लिये साहित्य उदात्त था ।
- लोंगिनुस के उदात्त तत्त्व की महत्ता को विद्वानों ने "स्वच्छन्दतावाद" "आधुनिकतावाद" एवं यथार्थवाद से भी जोड़ा है

उदात्त तत्व अर्थ एवं परिभाषा

- लोंगिनुस ने अपने"पेरिइप्सुस" ग्रंथ में काव्य के उदात्त तत्त्व को प्रतिपादन करने के लिये ही लिखा था। उदात्त तत्त्व शैली का महत्तम गुण है, जो विभिन्न व्यंजनाओ के माध्यम से किसी व्यक्तित्व या घटना के रोमांचिक आवेशपूर्ण एवं भयंकर तत्त्व को प्रकट करने के लिये प्रयुक्त होता है ।

- अरस्तू ने अपने विरेचन सिद्धांत के अंतर्गत उदात्त को सर्वाधिक सहायक तत्व के रूप में स्वीकार किया है ।

- पाश्चात्य कला समीक्षकों में -हीगल, कांट, ब्रेडले, कैरेट, ब्रुक, बोसांके,वाल्टर, पेटर, आदि ने इस विषय पर उत्कृष्ट विवेचन किया है।

- कांट के अनुसार आध्यात्म स्फूर्ति ही उदात्त का सार या तत्व है । यह सौंदर्य की अनुभूति को सुखकर एवं तृप्तिपद बनाकर उदात्त की अनुभूति के स्तर पर ले जाता है ।

• डॉ0हरद्वारी लाल शर्मा ने अपनी पुस्तक 'सौंदर्य शास्त्र' में उदात्त की परिभाषा देते हुए लिखा है-"ब्रम्हालय वैराग्य की चरम भूमि है और साथ ही अनन्त वेदना जो वैराग्य से उत्पन्न होती है, इस चार्म भूमि में पहुंच कर अनन्त आंनद को उत्पन्न करती है । यही उदात्त की अनुभूति है" ।

• हिन्दी वैष्णव भक्ति कवियों में उदात्त की अनुभूति अपने उत्कृष्ट रूप में मिलती है । उनके लीला वर्णन में सुन्दर से कहीं अधिक अभिव्यक्ति इस तत्त्व की हुई ।

• लोंगिनुस का मानना है कि काव्य में एक ऐसी शक्ति होती है जो बुद्धि और तर्क से ऊपर होती है।

• उदात्त प्रभाव ही दर्शक या पाठक को प्रभावित करता है ।किसी कृति में उदात्त गुण के सम्पादन के लिए पहली आवश्यकता है कि रचनाकार के उदात्त विचारों को धारण करने की क्षमता।

• दूसरी उन विचारों एवं भावों को अभिव्यक्ति देने की शक्ति।

• किसी रचना के दो पक्ष होते हैं-

1- अनुभूति पक्ष

2- अभिव्यक्ति पक्ष

• लोंगिनुस ने श्रेष्ठ काव्य संरचना के मुख्य पाँच तत्वों को आवश्यक माना है।

• **उदात्त मनोभाव**(उत्कृष्ट संवेग)-इस तत्त्व में हर्ष, उल्लास, ओज, शैर्य,,विषमय आदि आते हैं जो उदात्त मनोभाव को जन्म देते हैं।
• **उदात्त विषय और चरित्र** - काव्य में उच्च गरिमामय कथ्य एवं चरित्र होना चाहिए।यदि ऐसा हुआ तो सभी बातें उदात्त हो जाती हैं। उनके हीन होने पर वर्णन एवं प्रभाव दोनों घटिया हो जाते हैं।

• **उदात्त अलंकृत**-(अलंकारों का समुचित प्रसङ्गानुभूति)-जिस काव्य में भाषा और तत्त्व के अतिरिक्त शिल्प पर भी जोर दिया जाता है वह साहित्य की उदात्तता की श्रेणी में आ जाता है।अर्थात अनावश्यक या जानबूझकर अलंकारों का प्रयोग कविता को बोझिल बनाता है।जैसे केशव की रामचंद्रिका ।

• **उत्कृष्ट भाषा--**जिसमें प्रभावशाली शब्द चयन, मुहावरे, छंद-लय का उत्कृष्ट प्रयोग हो वे उदात्त की अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।अर्थात लोंगिनुस का मानना कि एक अच्छे रचनाकार को संयमित एवं सटीक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

• **गरिमामय रचनाविधान--**इसमें विभिन्न घटनाओं, विचारों और कार्यों तथा विश्व विधान का समेकित संघटन और संगुम्फन आवश्यक है । इस गुण के होने से कविता उदात्त के धरातल पर प्रतिष्ठित हो जाती है।

उदात्त के बाधक तत्व --

- लौंगिनुस ने कविता को जहाँ उदात्त बनाने वाले तत्वों पर चर्चा की है वही उदात्तता में बाधक तत्वों का भी जिक्र किया है जिससे कवि को सदैव बचना चाहिए।
- कला में दो प्रकार के दोष होते हैं

- रचना के नियम सम्बन्धी

- विषय वस्तु सम्बन्धी

- लोंगिनुस ने दोनों को समान रूप से बाधक नहीं माना है।

- उसका मानना है कि " कला में हम निर्दोषता की प्रशंसा करते हैं, तो प्रकृति में भव्यता की, और मनुष्य को वाकशक्ति का वरदान प्रकृति से प्राप्त हुआ है।

- शब्दाडंबर, बचकाना पन, भावाडम्बर। काव्य में ये तीनों दोष भाव और कला में अलगाव से आते हैं और उसका प्रभाव तुच्छतापूर्ण होता है।

• शब्दाडंबर 'राजसी' अभिरुचि का परिणाम है और बालेयता(बचकाना पन) पंडिताऊ दृष्टि का ।

• यह दोष असाधारण, अविस्मरणीय और उससे भी अधिक मनोरंजक होने की कोशिश से उत्पन्न होता है।ऐसा रीतिकाल की कविता के सन्दर्भ में कहा जा सकता है ।

• आडम्बर के विभिन्न रूपों की चर्चा लोंगिनुस ने पेरिइप्सुस में की है।

• शब्दाडंबर को लोंगिनुस शोथ (सूजन) बताते हुए एक कहावत उदधत करते हैं-" जलोदर से अधिक शुष्कता कहीं नहीं होती । यह रोग ऐसा है जैसे फुला-फुला कर सरकंडे की पिपहरी बनना " ।

• बलेयता को लौंगिनस ने 'कृतिमता' की रंगीन चट्टान कहा हैं।

• भावाडम्बर को उसने शराबियों जैसा आचरण कहा है । जो अपने भावों पर अंकुश नहीं रख पाते ।

निष्कर्ष:

• लोंगिनुस ने उदात्त के प्रभाव को सार्वभौमिक और सर्वकालिक मानते हुए कहा है कि उदात्त मनुष्य का नैतिक उन्नयन है।कवि को अपनी रचना को उदात्त के धरातल पर ही प्रतिष्ठित करना चाहिए ।

• लोंगिनुस का कहना है कि कवि को कला सम्बन्धी दोष की अपेक्षा आडम्बर और अतिरेक से बचना चाहिए।

• शब्दाडंबर, बचकानापन और भावाडम्बर किसी काव्य के सबसे बड़े अवगुण हैं, दोष हैं । कवि को किसी भी दशा में इनसे बचना चाहिए।

• लोंगिनुस कहता है कि इन अवगुणों से कवि तभी बच सकता है जब उसकी आत्मा में महानता होगी, उसका चिंतन महान होगा, उसका लक्ष्य महान होगा ।

• उसका मानना था कि कला के साधन तभी सार्थक होते हैं जब वे एक तरफ गरिमा पूर्ण आत्मा से तो दूसरी तरफ जीवन के यथार्थ से संबद्ध होगा ।यथार्थ का मतलब ब्यौरों का संग्रह नहीं, मानवीय विवेक से यथार्थ की तर्कसंगत पहचान है।यथार्थ के उदात्त और जीवन्त अंशों की पहचान है । इसीलिए चयन दृष्टि का अधिक महत्व है ।

- उदात्त की नई कसौटी पेश करते हुए लौंगिनुस ने न केवल प्रचलित काव्य शास्त्र से, बल्कि प्रचलित समाज व्यवस्था और मूल्य व्यवस्था से भी तीखा असन्तोष व्यक्त किया है।यही असन्तोष-विद्रोह लौंगिनुस को गम्भीर अर्थ में विद्रोही, यथार्थवादी और मानवतावादी आलोचक, चिन्तक स्थापित करता है ।

धन्यवाद